श्री रामायणजी की आरती

आरती श्री रामायण जी की । कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥
गावत ब्राह्मादिक मुनि नारद । बालमीक विज्ञान विशारद ॥
शुक सनकादि शेष अरु शारद । बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

गावत वेद पुरान अष्टदस । छओं शास्त्र सब ग्रन्थन को रस ॥
मुनि-मन धन सन्तन को सरबस । सार अंश सम्मत सबही की ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

गावत सन्तत शम्भू भवानी । अरु घट सम्भव मुनि विज्ञानी ॥
व्यास आदि कविबर्ज बखानी । कागभुषुण्डि गरुड़ के ही की ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥

कलिमल हरनि विषय रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ॥
दलन रोग भव मूरि अमी की । तात मात सब विधि तुलसी की ॥

आरती श्री रामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिया-पी की ॥